मातृ एवं शिशु विकास कार्यक्रम 1982

R·39·B·1

समाज कार्य एवं अनुसंधान केन्द्र
तिलोनियां, मदनगंज
राजस्थान - 305816

भूमिका :

समाज कार्य एवं अनुसंधान केन्द्र एक स्वयं सेवी संगठन है जो राजस्थान राज्य में अजमेर जिले के तिलोनिया गाँव में वर्ष 1972 से कार्यरत है। संगठन की शुरुआत इस क्षेत्र में पाई जाने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए हुई। सबसे पहले खेती के लिये सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराना इस संगठन का ध्येय था लेकिन ज्यों-ज्यों केन्द्र के कार्यकर्ता गांव के लोगों के साथ सम्पर्क में आते गये गांव की मुख्य समस्याएँ, जिनको दूर करना नितान्त आवश्यक था, जानकारी में आती गई वे क्रमशः इस प्रकार थी। स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, रोजगार आदि।

धीरे-धीरे सभी समस्याओं के समाधान हेतु कुछ ऐसे कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये जिनमें एक दूसरे का पारस्परिक जुड़ाव हो। शुरुआत में स्वास्थ्य कार्यक्रम को चलाने हेतु केन्द्र में एक छोटे रूप में चिकित्सालय स्थापित किया गया। रोगियों की निरन्तर वृद्धि से जहाँ यहाँ की चिकित्सा के प्रति विश्वास पैदा होता दिखाई दिया केन्द्र के कार्यकर्ताओं में यह बात पैदा हुई कि हम सिर्फ चिकित्सालय से गांव के स्वास्थ्य स्तर को ऊँचा नहीं उठा सकते। रोगियों में भी विशेषतः माता एवं बच्चे थे। पांच वर्ष तक के बच्चों की मृत्युदर काफी अधिक थी जिसे सिर्फ चिकित्सालय से रोकना सम्भव नहीं था। अतः कोई ऐसा माध्यम निकालनें का सोचा गया जो माँ एवं बच्चों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार ला सके। इसके लिये बालवाड़ी कार्यक्रम हाथ में लिया गया जिसमें बच्चों को पूरक आहार देने के साथ-साथ शिक्षा के प्रति लगाव भी पैदा करना था लेकिन इसमें जो समस्या सामने आई वह थी बालसेविका की नियुक्ति, क्योंकि केन्द्र का जो सोच था कि कम से कम कक्षा 10 पास महिला ही बालसेविका नियुक्त हो जो शहर से ही उपलब्ध हो पाती क्योंकि गांव में महिला शिक्षा का प्रतिशत काफी कम था अतः बालवाड़ियाँ खुलती रही और बन्द होती रही। धीरे-धीरे इसमें भी बदलाव आया। बालवाड़ी जहाँ सिर्फ बच्चों के लिये थी वहीं उसमें माताओं से सम्पर्क को विशेष महत्व दिया गया। चिकित्सा क्षेत्र के कर्मचारी बालसेविका के सहयोग से टीके एवं इम्युनाईजेशन पर विशेष ध्यान देने लगे। पूरक आहार स्थानीय परिवेश में उपलब्ध सामग्री से तैयार किया गया जिसे पहले केन्द्र में तैयार करके परीक्षण के तौर पर कुछ ऐसे बच्चों के साथ प्रयोग किया गया जो पोषक तत्वों की कमी से कमजोर थे।

प्रयोग से मिलने वाली सफलता के पश्चात् इसे अमृतचूर्ण का नाम दिया गया जिसे गाँव की महिलाओं द्वारा अपनाया भी गया। फिर भी इन बालवाड़ियों के माध्यम से केन्द्र की अपेक्षा पूरी नहीं हो पाई तो गाँवों में ग्रामीण पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति की महिलाओं के प्रशिक्षण केम्प आयोजित किये गये। इसके साथ चिकित्सा विभाग ने यह पाया कि अधिकांश बच्चों की माँ की मौत प्रसव के समय असुरक्षित प्रसव के कारण होती है तो उन्होने परम्परागत दाइयों (जो गाँवों में प्रसव कार्य कराती है) से सम्पर्क स्थापित किया। शुरु में वे महिलायें इनके साथ नहीं जुड़ना चाह रही थी तो कुछ प्रोत्साहन राशि को नियमित रूप से इन्हें देते रहने का आश्वासन देकर इन्हें प्रशिक्षित किया गया इससे निश्चित रूप से बच्चों एवं माँ की मृत्यु दर में काफी कमी आई। केन्द्र में भी एक प्रसूति केन्द्र स्थापित किया गया जिससे ये दाईयां जब अपने नियंत्रण में किसी प्रसूता को नहीं कर पाती तो केन्द्र के प्रसूति केन्द्र पर पहुंचाने का प्रयास करती। इन दाइयों के कार्यक्रम से न केवल माँ एवं बच्चों की मृत्यु दर में ही कमी आई है बल्कि परिवार कल्याण कार्यक्रम में भी इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सिलौरा विकास खण्ड में परिवार कल्याण कार्यक्रम के लिये केन्द्र का अपना एक विशेष स्थान है जहाँ माताएँ पूर्ण विश्वास के साथ आती है। केन्द्र के द्वारा उनके वर्तमान बच्चों के स्वास्थ्य की विशेष देखभाल के लिये ग्रामीण स्तर के कार्यकर्त्ता, बालसेविका, दाई, रात्रि शाला अध्यापकों का पूरा सहयोग लिया जाता है।

शुरू में बालसेविका जो बाहर से आकर गाँव में कार्य करती थी उसकी जगह अब गाँव में थोड़ी पढ़ी लिखी महिला को महत्व दिया जाने लगा। महिला चयन के समय गाँव की सहमति को ध्यान में रखा गया तथा केन्द्र में ही उनको प्रशिक्षण दिया गया। महिला गाँव की बहु हो इसका भी पूरा ध्यान रखा गया क्योंकि यदि बेटी का चयन किया जाता तो शादी के बाद बाहर जाना सम्भव था। यदि कहीं गाँव की बेटी का चयन किया गया है तो वह या तो परित्यक्ता है अथवा विधवा है।

R-39-B-1

चिकित्सा विभाग के आंकड़ों के अनुसार यह भी पाया गया कि अधिकांश बच्चों की मृत्यु दस्त के कारण होती थी जिसको फैलाने में अस्वच्छ पानी का विशेष योगदान होता है। केन्द्र एवं सरकार दोनों के द्वारा विकास खण्ड के गाँवों में हस्तनल कूप लगाये गये।

इसके बावजूद भी गाँव की महिलाएँ खुले कुओं के पानी का ही प्रयोग करती पर जब बालबाड़ी, रात्रि शालाएँ एवं स्वास्थ्य कार्य कर्ताओं ने गाँव के स्तर पर इसमें रुचि जगाने की तथा सुरक्षित पानी का महत्त्व बताने की कोशिश की तो इसे अपनाया गया। खुजली एवं दस्त जैसी बीमारीयों में काफी रोकथाम भी हुई। सब्जी बगीचे एवं पेड़ पौधे लगाने को भी प्रेरित किया गया।

जिन परिवारों का आर्थिक स्तर काफी गिरा हुआ था उन परिवारों की महिलाओं को केन्द्र के ग्रामीण हस्तकला विभाग से कार्य दिया जाने लगा तथा पाक्षिक एवं मासिक बैठकों में उन्हें स्वास्थ्य शिक्षा से जोड़ा गया और साक्षरता को भी इसका अंग बनाया गया। करीब 250 महिलाएँ इससे निरन्तर जुड़ी हुई हैं।

अभी गाँव की कुछ महिलाओं को जो निरक्षर तो हैं लेकिन उनमें नेतृत्व की क्षमता हैं, को चयनित कर 6 माह का नियमित रूप से प्रशिक्षण दिया जा रहा है ताकि वे स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार से जुड़े सभी प्रश्नों के लिए अपने स्तर पर समाधान ढ़ंढ सके।

इस प्रकार केन्द्र ने अपने स्तर पर माँ एवं बच्चों की देखभाल हेतु विभिन्न कार्यक्रमों को माध्यम बनाया है जिसका विस्तृत विवरण आप इस पुस्तक में देखेंगे।

महिला विकास कार्यक्रम
समाज कार्य एवं अनुसंधान केन्द्र,
तिलोनिया (अजमेर)

R-33-3-1

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
1. उद्देश्य	1
2. पूरक आहार	1 से 2
3. सुरक्षात्मक कार्यक्रम	2 से 4
4. दाई कार्यक्रम	4 से 7
5. शिशुओं के लिए उद्देश्य	8 से 11
6. ओडियोबिजल की भूमिका	11 से 12
7. ग्रामीण महिला कार्यकर्त्ता का प्रतिवेदन	12 से 17
8. ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यक्रम	18 से 23
9. क्षय निवारण कार्यक्रम	24 से 29
10. मुर्गीपालन	29 से 30
11. हेण्ड पम्प की सूची	30 से 33
12. परिवार कल्याण कार्यक्रम	33 से 34
13. विकलांग	34 से 35
14. विद्यालय पूर्व शिक्षा प्रोग्राम की कहानी	35 से 42
15. पूर्व प्राथमिक शिक्षा	42 से 48

—

आठवे चित्र में उसकी मां हैरानी से उसकी पीठ देख रही है। उसकी पीठ पर कितनी घास उग आई है। वह कोई उपाय सोच रही है। आखिर वह निश्चय कर लेती है।

नवे चित्र में बताया गया है कि संपडू की मां संपडू को बिठाकर उसकी पीठ से घास काट रही है ताकि उसे नहलाया जा सके। घास काटते समय संपडू बहुत रोता है। उसकी मां उसे समझाती है कि बच्चों को इतना गंदा नहीं रहना चाहिये। रोजाना नहाना चाहिये। साफ कपड़े पहनना चाहिये।

दसवें चित्र में बताया गया है कि संपडू जो पहले सफाई से कोसों दूर था अब वह खुशीखुशी नहा रहा है।

इस कहानी से बच्चों को यह बताया गया है कि उन्हे रोजाना नहाना चाहिए सफाई से रहना चाहिये अतः विशेषकर सफाई को ही अधिक महत्व दिया गया है।

ऑडियोविज्यूअल की भूमिका :

हमारे कार्यक्रमों में संस्था के इस विभाग की भी महत्व पूर्ण भूमिका है। जहां जहां भी हमारी बालवाडी व रात्रि शालाये चलती हैं वहां जाकर यह दल स्लाईड शो व बच्चों की फिल्मे दिखाता है जिसे सिर्फ बच्चे ही नहीं अपितु उनके माता पिता भी देखते हैं और इससे शिक्षा ग्रहण करते हैं। बच्चों पर इसका इतना प्रभाव देखा गया है कि जब भी हमारे पर्यवेक्षक एवं पर्यवेक्षिकायें शालाओं में जाते हैं तो बच्चे उनसे कहते हैं कि एक बार वैसा ही सिनेमा हमें और दिखाओ। दैनिक जीवन के आचरण में परिवर्तन भी देखा गया है जैसे नाखून काटना, स्नान करना व सफाई करना आदि।

इन सबके अलावा दाई प्रशिक्षण के दौरान भी इस तरह के कई चित्रों से स्त्रियों को अवगत कराया जाता है ताकि जहां तहां वे इन बातों को बताये और स्वस्थ रहने की सलाह दें।

बालवाडी से अब तक लाभान्वित बच्चों व व्यक्तियों की सूचि निम्न प्रकार है—

सत्र	गांव का नाम	कुल संख्या
1980	कदमपुरा, बड़गांव, नरेना, नयागांव, बहारू	
	25 20 40 25 30	140
1981	नरेना, बहारू, सलेमाबाद, थल, रघुनाथपुरा	
	40 30 40 30 25	
	रलावता, हरमाड़ा	
	30 40	235
1982	नरेना, बुहारू, सलेमाबाद, थल, रघुनाथपुरा	
	40 30 40 30 30	
	रलावता हरमाड़ा	
	30 40	240

रात्रि शालायें

1976 से अभी तक 30 रात्रि शालायें चल रही हैं जिनमें प्रत्येक शाला में 30 छात्रों के लगभग पढ़ने आते हैं इस प्रकार 90 छात्र प्रति वर्ष विभिन्न प्रकार से लाभाविन्त हैं।

जहां जहां भी फिल्म प्रदर्शन होता वहां पूरा गांव इसे देखता है और उसका अनुसरण भी करता है।

दूसरी कहानी का नाम है नख-नखिया, इसमें एक ऐसे बालक को बताया गया है जिसके नाखून बढ़ हुये हैं लम्बे नाखून होने के कारण उनमें गन्दगी भरी रहती है जिससे खाना खाते समय गन्दगी के किटाणु पेट में चले जाते हैं फलतः बालक कई बिमारियों का शिकार हो जाता है अतः इस कई बिमारियाँ उत्पन्न हो जाती है। बच्चे का पेट असामान्य रूप से फूला हुआ है वह ठीक से बैठ नहीं सकता है न ही ठीक से चलफिर सकता है आदि। उसकी मां उसके नाखून काटती है इसके बारे में बताती है कि नाखुनों से बीमारियां उत्पन्न हो जाती है।

तीसरी कहानी दंत्या दंत्योड़ा की है जिसमें एक बच्चा है जो कभी दांत साफ नहीं करता है मीठी चीजें रात को मुंह में